शब्द–ब्रह्म
प्रवेशांक ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2012

कविता : शिल्प और सौंदर्य

डॉ. पदमासिंह
प्राचार्य, शासकीय स्नातक महाविद्यालय, पीथमपुर, धार मध्यप्रदेश

कविता का शाब्दिक अर्थ है काव्यात्मक रचना या कवि की कृति, जो छन्दों की श्रृंखलाओं में विधिवत बांधी जाती है। कविता मानव की अनुभूतियों को शब्दाकार देती है जिससे कवि की निजी अनुभूतिया सार्वजनीन हो जाती हैं । अनन्त रूपात्मक जगत मानव हृदय को काल्पनिक संसार में भटकाता रहता है , लेकिन कविता का संसार मनुष्य को स्वार्थ सम्बन्धों के संकुचित घेरे से ऊपर उठाता है और समस्त सृष्टि से मधुर रागात्मक सम्बन्ध जोडने में सहायक होता है। आचार्य श्रीपति ने कविता को परिभाषित करते हुए कहा है कि शब्द अर्थ बिन दोष गुण, अलंकार रसखान ताको काव्य बखानिए श्रीपति परम सुजान संस्कृत के विद्वान आचार्य भामह का मत है कि- 'शब्दार्थो सहितौ काव्यम्', रसवादी आचार्य विश्वनाथ ने कविता में रस को महत्वपूर्ण बताते हुए 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' कह कर कविता का स्वरूप स्पष्ट किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'कविता क्या है' षीर्षक निबंध में कविता को 'जीवन की अनुभुति' कहा है। जयशंकरप्रसाद ने सत्य की अनुभूति को ही कविता माना है। वे कहते हैं कि संसार के सुख- दुख से परे कविता का मधुर और अनूठा संसार मनुष्य को सुख संतोष प्रदान करता है। वे इसी काव्य जगत के आनंद में डूबे रहने की कामना करते हुए कहते हैं -

ले चल मुझे भुलावा दे कर मेरे नाविक धीरे-धीरे
जिस निर्जन में सागर लहरी, अम्बर के कानों में गहरी
निश्छल प्रेम कथा कहती हो तज कोलाहल की अवनि रे

आधुनिक युग की मीरा महादेवी ने भी कविता का स्वरूप स्पष्ट करते हुए कहा है कि "कविता कवि विशेष की भावनाओं का चित्रण है। प्रकृति के अद्भुत चितेरे आंग्ल कवि वर्डस्वर्थ का विचार है कि "कविता उत्कट भावनाओं का सहजोद्रेक है।" कालरिज के अनुसार भावनाओं की क्रमिक अभिव्यक्ति को सुन्दर शब्दों में सजाना ही कविता है। शैली ने कविता में करुणा की प्रमुखता स्वीकार की है। कार्लाइल ने संगीतमय विचार को कविता माना है। डॉ जानसन ने "सत्य और आनन्द के मिश्रण की कला को कविता" कहा है, जिसमें बुद्धि के साथ कल्पना का प्रयोग होता है। एडगर एलन पो ने 'सौंदर्य की संगीतात्मक सृष्टि को कविता कहा है।' मैकाले ने इसे "शब्दों की चित्रकला" कहा है। बैली ने 'कविता को महान सत्य की अभिव्यक्ति' कहा है और शेक्सपियर ने कविता को 'कल्पना की पुत्री कहा है'। इन सभी विद्वानों ने कविता को कवि के भावलोक की अनूठी अभिव्यक्ति माना है जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि 'कविता बुद्धि और हृदय की समन्वयात्मक सृष्टि है, जिसके माध्यम से कवि भावलोक के अनूठे संसार के दर्शन कराता है। कविता हमारे हृदय के द्वार खोल कर उस सत्य के दर्शन कराती है जो जगत में खोजने पर भी नहीं मिलता। इसीलिए कहा जाता है कि-

'जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि'। प्रसिद्ध कवि मिल्टन ने अपनी विश्व प्रसिद्ध रचना 'पेराडाइज लास्ट' में जिस अनूठे स्वर्ग लोक का चित्रण किया है, और जयशंकरप्रसाद ने कामायनी में जिस महाप्रलय का चित्रण किया है वह काल्पनिक होकर भी सहृदय पाठक के समक्ष वास्तविक रूप में साकार हो उठता है। वास्तव में कवि की प्रतिभा यत्र -तत्र बिखरे सौंदर्य को संकलित करके एक नई आनन्दमयी सृष्टि की रचना करती है। हर युग में कवि अपनी कविता के माध्यम से युग-सत्य के ही दर्शन कराता है। कविता में सत्य, शिव और सौंदर्य की अलौकिक रसधार प्रवाहित होती है, जो सबको एक समान आनन्दित करती है। कविता समाज को नई चेतना प्रदान करती है एवं आनन्द का सही मार्ग दिखाती है और मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा करती है। तुलसी, सूर, प्रसाद और पन्त जैसे महान कवियों की रचनाओं से इस कथन की सत्यता प्रमाणित होती है। कविता का सीधा सम्बन्ध हृदय से होता है। कविता में कही गई बात का असर तेज और स्थायी होता है। कविता के दो पक्ष होते है। बाह्य यानि कला पक्ष और आन्तरिक यानि भाव पक्ष। हम सर्वप्रथम कला पक्ष पर विचार करेंगे। कविता को मर्मस्पर्शी बनाने में सार्थक ध्वनि समूह का बड़ा महत्व है। साथ ही विषय को स्पष्ट और प्रभावशाली बनाने में शब्दार्थ योजना का भी बड़ा महत्व है। सार्थक और उपयुक्त शब्दों का चयन कविता के बाहरी रूप को संपूर्ण और आकर्षक बनाता है । कवि की कल्पना शब्दों के प्रभावी और उचित प्रयोग द्वारा ही साकार होती है। अपनी हृदयगत भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए कवि भाषा की अनेक प्रकार से योजना करता है और इस प्रकार प्रभावशाली कविता रचता है। इसे यूं समझा जा सकता है कि शब्द शक्ति, शब्द गुण, अलंकार ,लय ,तुक, छंद, रस एवं , चित्रात्मक भाषा, इन सबके सहारे कविता का सौंदर्यसंसार आकार ग्रहण करता है। लय और तुक कविता को सहज गति और प्रवाह प्रदान करते हैं। लयात्मकता कविता को संगीतमय ओर गेय बनाती है, जिससे कविता आत्मा के तारों को झंकृत कर अलौकिक आनंद प्रदान करती है। छंदोबद्ध कविता में तुक का अपना एक अलग स्थान है। जब किसी छंद के दो चरणों के अंत में अन्त्यानुप्रास आता है, तो उसे तुक कहा जाता है, जिसके कारण कविता में माधुर्य और प्रभाव बढ़ जाता है। छंद कविता के पदों में सक्रियता और प्रभावशीलता लाता है। वह हमारी अनुभूतियों को लय, तान और राग से स्पंदित करता है। छंद के प्रमुख तीन तत्व होते है। प्रथम- मात्राओं और वर्णो की किसी विशेष क्रम से योजना। दूसरा गति और यति के विशेष नियमों का पालन। तीसरा चरणान्त की समता। कवि की आत्मा का नाद ही लय रूप में छंदों में प्रतिष्ठित होता है। छंद भावों को तीव्रता प्रदान करता है और कविता को रमणीय व सजीव बनाकर रस निष्पत्ति में सहायक होता है। रामचरित मानस के दोहे, सोरठे , चौपाई, रसखान के सवैये, सूर के पद और गिरधर की कुण्डलिया आदि सभी छंदों में बंधी रसमय भावधारा कविता के उत्कृष्ट उदाहरण है। कविता का एक और गुण हैं बिम्ब उपस्थित करना। चित्रात्मक भाषा का चमत्कार कविता को हृदय में उतार देता है। अंलकार के सार्थक प्रयोग

और शब्द चयन में विशेष ध्यान देने से कविता भाव संप्रेषण में सहायक होती है। किसी बात को विशेष ढंग से कहना और उसमें विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न करने के लिये अंलकारों से कविता की सज्जा करना कवि की प्रतिभा का परिचायक है। लेकिन यहाँ एक बात को अवश्य याद रखना चाहिए कि अलंकार कविता को चमत्कारी तो अवश्य बनाते हैं किन्तु वे काव्य की आत्मा नहीं हैं। वे कविता का साधन मात्र हैं साध्य नहीं। कोरे शाब्दिक चमत्कार प्रदर्शन को कविता नहीं कहा जा सकता। काव्य के गुण साहित्यशास्त्र के अनुसार कविता की शोभा के जनक हैं। ओजगुण चित को उत्तेजित करने वाला गुण है जो वीर रस की निष्पति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चित्त को प्रसन्न करने वाला माधुर्य गुण होता है। श्रंगार रस का वर्णन इससे प्रभावशाली होता है। इसी प्रकार प्रसाद गुण हृदय पर वैसा ही प्रभाव डालता है, जैसे सूखे ईधन में अग्नि और स्वच्छ जल पर प्रतिबिंब का प्रभाव पडता है। कविता में शब्दों का अर्थ ग्रहण कराने वाली काव्य शक्तियां भी महत्वपूर्ण हैं। अभिधा शब्दशक्ति सीधा अर्थबोध कराती है। लक्षणा से किसी विषिष्ट अर्थ की प्रतीकों के माध्यम से प्रतीति होती है एवं व्यंजना शब्दशक्ति से व्यंग्यार्थ का बोध होता है। शब्दों का चयन कविता में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है । शब्द तभी सार्थक होते हैं जब सहृदय पाठक के हृदय में रस की प्रतीति हो । रस काव्य का प्राण तत्व है इसीलिए काव्यानंद को ब्रह्मानंद सहोदर भी कहा गया है। रस का स्थायी भाव मनुष्य के हृदय में सदैव रहने वाला भाव है। मनुष्य के हृदयगत नौ भाव ही काव्य के नौ रस हैं जो विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से यथा समय प्रकट होते हैं। आश्रय के मन में भाव उत्पन्न होता है। जिसके प्रति भाव उत्पन्न होता है उसे आलम्बन कहते है। आश्रय की चेष्टाएं अनुभाव कहलाती हैं। भावों को प्रखर करने वाले उपादान उद्धीपन कहलाते हैं। हृदय में संचरण करने वाले क्षणिक भावों को संचारी भाव कहा जाता है, जो संख्या में 33 होते है। श्रंगार, वीर, हास्य , करूण, रौद्र, भयानक, वीभत्स, अदभुत और शांत नौ प्रमुख रस है। इनमें श्रृंगार को रसराज कहा गया है।

कविता को शिल्प की दृष्टि से देखने के पश्चात इसके आन्तरिक स्वरूप पर भी विचार करना आवश्यक है। इसे भाव पक्ष भी कहते हैं। कवि के हृदय की कोमल अनुभूतियों और भावनाओं का शब्दाकार रूप ही कविता है। कवि की भावना के मनोरम साम्राज्य में उसका उद्धेश्य झलकता है, वही कविता का भावपक्ष कहलाता है। कवि की दृष्टि लोकमंगल पर रहती है। कवि कविता द्वारा युगीन सत्य को आकार देता है, समाज को दिशा निर्देश देता है और श्रेष्ठ गुणों और आदर्शों की प्रतिष्ठा करता है। कविता का उद्धेश्य है नैतिकता और धर्म का सच्चा स्वरूप दर्शाना और राजनीति का शुद्ध रूप प्रतिष्ठित करना। कवि की दृष्टि से समाज को नवीन दृष्टिकोण से विचार करना आता है और जगत के रहस्यों का नया अर्थ बोध होता है। कविता कवि के हृदय का शुद्ध रूप हैं जिसमें लौकिक जीवन के सुख-दुख, प्रेम, करूणा, क्रोध व घृणा के भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगते है। इसे यूँ समझा जा सकता है कि कविता हृदय की तीव्रतम अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति है। बृद्धि

और कल्पना के योग से कवि बड़ी सरलता से बड़ी-बड़ी बातें कह देता है। कविता में निहित नीति व उपदेश सुनने वाले के पूरे जीवन को बदलने की सामर्थ रखते है। दर्शन आध्यात्म, प्रकृति और सूक्ष्म संवेदनाएं कविता के माध्यम से बड़ी सरलता से समझाई जा सकती हैं। राम चरित मानस में तुलसी ने जिन मानवीय मूल्यों की स्थापना की है, वे शाश्वत हैं, उनकी प्रासंगिकता कभी खत्म नहीं होगी। कविता म,मर्मस्पर्शी हो तो सदा के लिए अमर हो जाती है और उद्धरण बन जाती है। कवि का मन बहुत अधिक संवेदनशील होता है। वह सहृदय होता है इसलिए उसकी अनुभूति सर्वसाधारण से भिन्न होती है। उसके हृदय की निर्मलता, कोमलता और पवित्रता ही कविता को मर्मस्पर्शी बनाती हैं। वह सूक्ष्म पदार्थों को सूक्ष्म दृष्टि से देखता है और प्रकृति के कण-कण को विलक्षण बना देता है। उसकी भावुकता से कविता इतनी मधुर बन जाती हैं कि पढ़ने-सुनने वाला उसमें डूब जाता है। जीवन में आनन्द का सृजन करने वाली कविता तो ऐसी भागीरथी है जिसकी अमृत धारा में अवगाहन कर संसार का समस्त ताप मिट जाता है और मनुष्य कविता की इस पावन रसधार के अलौकिक आनन्द में डूब कर अपने जीवन को धन्य मानता है।